International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 326-333

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 326-333
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-03-2017
Accepted: 04-04-2017

**योगेन्द्र भारद्वाज**
शोधार्थी, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्र
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नव देहली-६७

**Correspondence**
**योगेन्द्र भारद्वाज**
शोधार्थी, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्र
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नव देहली-६७

# धनुर्वेदीय व्यूह संरचना

## योगेन्द्र भारद्वाज

## प्रस्तावना

ऋषियों ने सृष्टि के आदि में व्यवहार हेतु सभी वस्तुओं के नाम तथा कर्त्तव्य कर्मों का निर्धारण वेद से ही किया है[1]। संसार के उपलब्ध साहित्य में वेद प्राचीनतम हैं। इनका ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में परमपिता परमात्मा की विशेष प्रेरणा से हुआ। वेदों की महत्त तो लोक में ख्यात है किन्तु वेद की पौरुषेयता तथा अपौरुषेयता के विषय में मत-मतान्तर विद्यमान है। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इन चारों वेदों के उपवेद भी प्रसिद्ध हैं। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धर्ववेद, अथर्ववेद का अर्थवेद ( शिल्पशास्त्र ) सुप्रसिद्ध है।

युद्ध करने एवं लडने की प्रवृत्ति प्राणियों में अनादिकाल से चली आ रही है। सत्य तो भारतीय दर्शनों ने बता दिया है कि यह संसार क्षणिक है तथा केवल ब्रह्म ही सत्य है। सर्वत्र एक ही सत्य विद्यमान है- सर्वं खल्विदं ब्रह्म[2]। किन्तु मानव अपने स्वभाव के कारण लोक की मोह माया में उलझा रहता है तथा परस्पर अशान्ति उत्पन्न करता है, कभी मानसिक रुप से तो कभी शारीरिक रूप से युद्ध के द्वारा। देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार युद्ध का विकास या ह्रास होता जा रहा है। कभी प्राचीन महाभारत का धर्मयुद्ध के रूप में अर्वाचीन सर्जिकल स्ट्राइक के रूप में। मनुष्येतर प्राणियों में ये युद्ध प्रवृति नख-दन्त तथा अन्य उपायों के द्वारा अपनी रक्षा करने या उदरपूर्ति तक ही सीमित है, किन्तु मानव ने बुद्धि कौशल के प्रयोग से विविध शस्त्रास्त्रों का आविष्कार कर अपनी सुरक्षा तो की ही, अपितु स्वयं को समस्त विश्व के जीव-जन्तु तथा अन्य साधनों का मालिक भी बना लिया। शस्त्रास्त्र एवं युद्धसम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान का कथन करने वाले शास्त्र को ही *धनुर्वेद* कहा गया है।[3]

---

[1] सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ (मनु.)

[2] छा. उपनिषद् ३.१४.१.

[3] युद्ध शस्त्रास्त्र कुशलो रचना कुशलो भवेत्।
यजुर्वेदोपवेदोऽयं धनुर्वेदस्तु येन च॥ (शूत्र.४/२७८)

प्राचीनकाल में शास्त्र ही रक्षक होते थे। विभिन्न स्थलों पर शास्त्रों का प्रयोग आत्मरक्षा हेतु आवश्यक था। अतः इन्हें- ' शासनात्' शास्त्र कहा गया। जिससे शासन किया जावे अथवा जो शासन कराने में समर्थ प्राप्त करावे, वही शास्त्र है।

धनुर्वेद शब्द में धनुः पद रूढ है । इससे धनुष शब्द का ग्रहण होता है, किन्तु उपलक्षण से अन्यान्य आयुधों को भी ग्रहण किया जाता है । यद्यपि समस्त आयुधों में धनुष को श्रेष्ठता प्राप्त है । सम्भवतः सर्वप्रथम धनुः शब्द का इसीलिए प्रयोग किया गया है।[4] प्रस्थानभेद ग्रन्थ में इसकी पुष्टि भी की गयी है[5]। युद्ध के सात प्रकार कहे गये हैं- धनुष, चक्र, कुन्त, खड्ग, क्षुरिका, गदा तथा बाहु द्वारा किया गया युद्ध [6]।

## व्यूह निर्माण युद्ध जीतने का आधार है

विशिष्ट पद्धति से युद्धक्षेत्र में सेना को खडा करना *व्यूह* कहलाता है[7] । लोकभाषा में इसको *मोर्चाबन्दी* कहते हैं । व्यूह में युक्त सेना अल्पसंख्या में होती हुई भी प्रतिद्वन्दी सबल सेना को जीत सकती है । इसके विपरीत सबल सेना भी बिना व्यूह के छोटी व्यूह सेना को पराजित नहीं कर सकती[8] । सर्वप्रथम व्यूह रचना का संकेत अथर्ववेद में मिलता है । वहाँ भोग (सर्पवत् कुण्डलाकृति) द्वारा शत्रु सेना से अपनी रक्षा करने को कहा गया है[9]। भगवान राम ने लंका की घेराबन्दी गरुडव्यूह की रचना द्वारा की थी[10] । महाभारत में तो व्यूहरचना अपने चर्म पर थी । लोक में सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त **"अभिमन्यु तथा अर्जुन"** का सम्बन्ध व्यूह-रचना से विशिष्ट है । सम्प्रति समाज में जब व्यूह की वार्ता यदि आरम्भ होती है, तब सामान्य मानव के मस्तिष्क में केवल चक्रव्यूह ही कौंधता है। सम्भवतः ऐसा इसलिये है कि महाभारत में इसका प्रसिद्ध प्रयोग हुआ तथा इसकी कहानी वीर अभिमन्यु से जुडी है। किन्तु व्यूहों में से चक्रव्यूह भी एक भेदमात्र है। अथर्ववेद, कौटिलीय अर्थशास्त्र, अग्निपुराण, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, वीरमित्रोदय, शुक्रनीति, वाशिष्ठ-धनुर्वेदादि ग्रन्थों में व्यूह संरचना का विशिष्ट वर्णन उपलब्ध होता है ।

## सेना

सेना के चार अङ्ग होते हैं- १. पैदल सैनिक २. घुडसवार (अश्वारोही) ३.रथी सेना ४. हस्तिसेना । इसे ही चतुरङ्गिणी सेना कहा जाता है । वशिष्ठधनुर्वेदसंहिता का निर्देश है कि युद्ध करते समय थोडी सेना ही युद्ध करे। बहुत सी सेना चारों ओर घूमती रहे। समभूमि में श्रेष्ठ घोडों पर सवार होकर युद्ध करें। जल में हाथी पर बैठकर, तुम्बि, मशक या नावों पर चढकर युद्ध करें। पैदल सैनिक बन्दूक या धनुष लेकर अथवा वृक्षों पर चढकर युद्ध करें। स्थल में ढाल, तलवार तथा भालों से लडें। व्यूह में अपने शूरवीरों तथा तीव्रगति वाले सैनिकों को आगे रखें तथा अन्य को पीछे रखें। व्यूह संरचना में केवल राजा को ही निपुण न होकर सेना को भी चतुर तथा अनुशासित होना चाहिये। प्रत्येक सैनिक को ज्ञान रहे कि किस विशिष्टध्वनि को सुनकर कौन सा व्यूह बनाना है।

व्यूह रचना में निम्न पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है- पदाति= पैदल सेना, शमा= १४ अंगुल स्थान, आवाप= व्यूहरचना पश्चात् बची हुई सेना को व्यूह में लगा देना । प्रत्यावाप= केवल बची हुई सेना को लगाना। अन्वावाप= अश्व, रथी तथा हाथी में से किसी एक को मिलाना । अलावाप= दूषित व्यक्तिओं को मिलाना । सार= परम्परागत सेना, अभिसृत= आगे बढना, अपसृत= पीछे हटना, उन्मथ्यावधान= शत्रुसेना को नष्ट करके एकत्रित करना । वलय= गोलाकार गति में चलना, प्रकीर्णिका= विखर कर आक्रमण करना, व्यावृतपृष्ठ= पीछे लौटना इत्यादि ।

**व्यूह के भाग :** व्यूह के चार भाग होते हैं – सन्धि, पक्ष, कक्ष तथा उरस्य [11]। विष्णुधर्मोत्तरपुराण में समस्त व्यूहों को पाँच भागों में विभक्त होने का निर्देश है- दो पक्ष, दो

---

[4] धनूँषि उपलक्षणेन धनुरादिन्यस्त्राणि विद्यन्ते ज्ञायन्ते अनेनेति धनुर्वेदः । (हिन्दी विश्वकोष-भाग-२,पृ.७६)

[5] (अत्र धनुश्शब्दश्चापे रूढोऽपि चतुर्विधायुधे प्रवर्तते । तच्चतुर्विधं- मुक्तमुक्तं यन्त्रमुक्तम्) (प्रस्थानभेद पृ-७)

[6] धनुषश्चक्रं च कुन्त च खड्गञ्च् छुरिका गदा। सप्तमं बाहुयुद्धं स्यादेवं युद्धानि सप्तधा ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरपुराण श्लोक.७ )

[7] समग्रस्य तु सैन्यस्य विन्यासः स्थानभेदतः ।
स व्यूह इति व्याख्यातो युद्धेषु पृथिवीभुजाम्॥ (हलायुधकोष)

[8] वीरमित्रोदये राजचक्र लक्षणम् ।

[9] उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह।
भञ्जनमित्राणां सेना भोगिभिः परिवारय ॥ अथर्व.११.९.५

[10] गरुड व्यूहमारथाय सर्वतो हरिभिर्वृतः।
मां विसृज्य महातेजा लङ्कामेवाभिवर्तते॥ रामा युद्ध. २१.१२

[11] पञ्चधनुरनीकसन्धिः पक्षकक्षोरस्योनाम् । कौटिलीय अर्थशास्त्र

बन्धपक्ष (कक्ष), और एक उरस्य[12]। अग्निपुराण में व्यूह को सप्ताङ्कों वाला कहा गया है- उरस्य, कक्ष, पक्ष, मध्य, पृष्ठ, प्रतिग्रह और कोटी[13]।

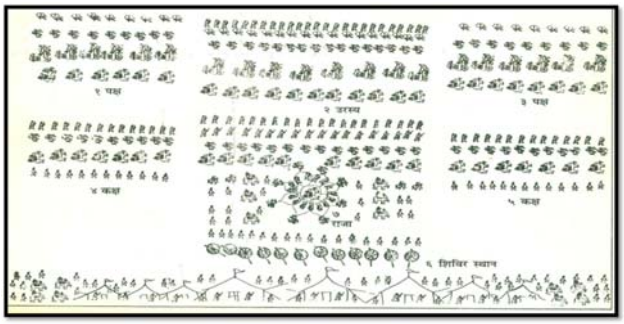

## व्यूह भेद

वैदिक काल से विभिन्न व्यूह संरचना द्वारा युद्ध जीते जाते हैं। प्रमुख व्यूहों नाम इस प्रकार हैं-

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. सर्पव्यूह | २. वृश्चिकव्यूह | ३. दण्डव्यूह | ४. चक्रव्यूह |
| ५. पद्मव्यूह | ६. श्येनव्यूह | ७. दुर्जेयव्यूह | ८. काकपादीव्यूह |
| ९. सर्वतोभद्रव्यूह | १०.गोधिकाव्यूह | ११. मकरव्यूह | १२. गोमूत्रिकाव्यूह |
| १३. सिंहव्यूह | १४. चक्रव्यूह | १५. अग्निव्यूह | १६. मालाव्यूह |
| १७. खलकव्यूह | १८. गरुडव्यूह | १९. वराहव्यूह | २०. बलाकाव्यूहादि |

## व्यूह निर्माण

व्यूह-संरचना में चतुरंगिणी सेना का प्रयोग किया जाता है। कौटिलीय अर्थशास्त्र में निर्दिष्ट है कि रणक्षेत्र से पाँच सौ धनुष दूरी पर छावनी स्थापित करके विजिगीषु रणक्षेत्र बनवाये। प्रमुख सैनिकों को पक्ष-कक्षादि पर स्थित करते हुये शत्रु की दृष्टि से बचकर सेनापति और नायक व्यूहरचना करें। जिसमें एक शमा (१४ अंगुल) के अन्तर पर पदाति सैनिक को खडा करें। तीन शमा (४२अंगुल) के अन्तर पर घोडे, पाँच शमा (७०अंगुल) पर रथ या हाथी को खडा करें अथवा यह अन्तर दुगना या तीन गुना रखकर व्यूहरचना करें। पाँच अरत्नि का एक धनुष होता है और इतने ही अन्तर से धनुषधारियों को खडा करें। तीन धनुष के अन्तर से घोडे और पाँच धनुष के अन्तर से रथ या हाथी स्थापित करें। व्यूह के भागों (सन्धि, पक्ष, कक्ष तथा उरस्य) आदि में पाँच धनुष का अन्तर होना चाहिये।

प्रत्येक अश्वारोही के आगे तीन पदाति, रथ अथवा हाथी के आगे १५ सैनिक और ५-५ घुडसवार और इतने ही पादरक्षक भी निश्चित होने चाहिये। इस प्रकार ३-३ की पंक्तियों में नौ-नौ और कक्ष-पक्ष में भी नौ-नौ रथ रखे जावें। इस प्रकार एक व्यूह में पैंतालीस रथ, दो सौ पच्चीस घोडे और छह सौ पचहत्तर पुरुष हुये। इसे समव्यूह कहा जाता है।[14]

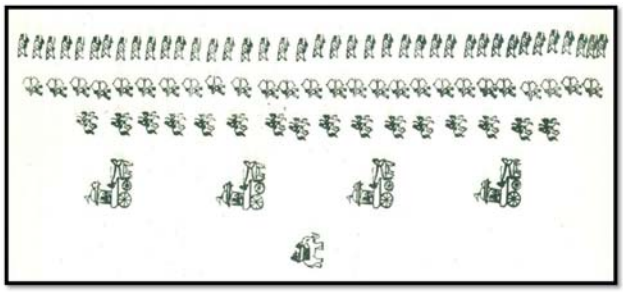

## व्यूह-निर्देशन

व्यूह निर्देशन भी व्यूह संरचना का आनुषंगिक अंग है। निर्देशन में भी निपुणता प्राप्त करना सेनापति अथवा राजा का कर्त्तव्य है। प्रधान(राजा) के भंग हो जाने पर सेना को सम्भालना दुष्कर कार्य है अथवा रण में व्यूह भंग होने पर अथवा सेना के पैर उखड जाने पर राजा/सेनापति ही समग्र सेना को निर्देशित करता है तथा यथास्थिति नूतन व्यूह निर्माण का आदेश देता है। कुशल शूरवीरों की सेना के साथ राजा युद्ध करने जाता है। व्यूह के समय सैन्य संचालन के विषय में धनुर्वेद निर्देशित करता है-

युद्ध में सैनिकों को न अधिक मिलाकर और न अधिक अन्तर से खडा करें। परस्पर सैनिकों के अस्त्र न टकरावें, ऐसी व्यूह-रचना होनी चाहिये। शत्रु की सेना की घेराबन्दी को मिलकर ही तोडें और अपने व्यूह की रक्षा भी मिलकर करें, जब सेना की संख्या कम हो। शूरवीरों को व्यूह के अग्रभाग में खडा करें, उनके पीछे भीरु सैनिकों को ऐसे खडा करें कि उनके कन्धे मात्र दिखें, जिससे संख्या बल जानकर प्रतिद्वन्द्वी भय करे। परिस्थिति के अनुसार व्यूह परिवर्तन करना चाहिये। यथा- यदि प्रतिद्वन्द्वी ने सर्पव्यूह बनाया है, तो राजा त्वरित गरुडव्यूह संरचना का निर्देश करे।[15] व्यूह

---

[12] व्यूहानामथ सर्वेषां प्श्चधा सैन्य कल्पना।
द्वौ पक्षौ बन्धपक्षौ द्वावुरस्यः पञ्चमो भवेत्॥

[13] उरस्य कक्षपक्षास्तु कल्प्यानेतान् प्रचक्षते।
उरः कक्षौ च पक्षौ च मध्यं पृष्ठं प्रतिग्रहः॥

[14] कौटिलीय अर्थशास्त्र

[15] विष्णुधर्मोत्तरपुराण खण्ड-२, अध्याय.१७७

रचना के संकेतों को पूर्व में ही निश्चित कर लेना चाहिये। व्यूह रचना के संकेतों को सुनते ही सैनिक शिक्षा के अनुसार शीघ्र ही एक व्यूह का निर्माण करें, जिसमें एकत्रित होना, फैलना, चारों ओर घूमना, सिकुडना, पीछे हटना, क्रम से सामने आना, खडे होना, लौटना, अष्टदल (पद्मव्यूह) बनाना, चक्राकार खडे हो जाना सम्मिलित है।[16]

युद्ध करते समय थोडी सेना का ही प्रथमतः प्रयोग किया जावे, परिस्थिति के अनुसार अन्य सेना का प्रयोग किया जाना चाहिये। जो राजकुमार, सामन्त, सेवक तथा शूरवीर हों, उनको स्वरक्षा हेतु राजा अपने समीप ही रखे तथा आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग करे। इस तरह एक कुशल सैन्यसंचालक का परिचय देते हुये राजा रण में निश्चित ही विजयी होगा।

**व्यूहानुसार युद्धविधान:** युद्ध निश्चित रूप से दो सेनाओं के मध्य होता है। सेना में पदाति, अश्व, रथ तथा हाथी होते हैं। इनको परस्पर कैसे युद्ध किया जावे, ऐसा विधान कौटिल्य निर्दिष्ट करते हैं-

**अश्वयुद्ध**

अभिसृत (आगे बढना), परिसृत (चारों ओर से घेरना), अतिसृत (अचानक धावा बोलना), अपसृत (पीछे हटना), उन्मथ्यावधान (शत्रुसेना को नष्ट करके एकत्रित होना), वलय (गोलाकार गति में चलना), गोमूत्रिका बैल के चलते समय मूत्रत्याग सदृश जो रेखा बनती है, उसके समान तिरछा चलना, मण्डल (मण्डलाकार चलना), प्रकीर्णिका (बिखरकर आक्रमण करना), व्यावृतपृष्ठ (पीछे लौटना), अनुवंश सेना के साथ चलना, आगे से-पीछे से-पार्श्वभागों से भग्न सेना की रक्षा करना तथा भग्न सेना की सहायता करना- ये अश्वों के युद्ध कहे गये हैं।

**हस्तियुद्ध**

प्रकीर्णिका को छोडकर ये सब कार्य, चारों अङ्गों (पदाति, अश्व, रथ, हाथी) का नाश, बिखरे हुये या सामूहिक रूप से शत्रु का घात, शत्रु पक्ष की दायें-बायें या मध्य स्थित सेना का संहार, शत्रु के छिद्र देखकर प्रहार करना और सोते हुये सैनिकों को कुचलना- ये हाथियों के द्वारा किये जाने बाले युद्ध हैं।

**रथयुद्ध:** उन्मथ्यावधान (शत्रुसेना को नष्ट करके एकत्रित होना) को छोडकर पूर्वोक्त सभी कार्य रथों के द्वारा किये जाते हैं। अपनी भूमि में स्थित होकर शत्रु पर चढाई करना, आक्रमण करके पीछे हटना और एक स्थान पर स्थिर होकर युद्ध करना – इन्हें रथयुद्ध कहते हैं।

**पदाति:** सभी स्थानों एवं कालों में शत्रुसेना पर प्रहार करना एवं अपनी सेना की रक्षा करना- यह पदाति सैनिकों का युद्ध कहा जाता है।[17]

**व्यूह संरचना के समय राजा के लिये निर्देश**

राजा को राज्य का मूल माना जाता है। युद्ध का प्राणनायक राजा अथवा सेनापति होता है। युद्ध में यदि सहसा राजा की हत्या हो जाती है, तो जीतती हुई सेना भी हार जाती है। इसलिये निर्दिष्ट है कि स्वयं राजा मुख्य युद्धस्थल से दो सौ धनुष दूर रहकर प्रतिग्रह (पीछे सुरक्षित सेना) में स्थित रहे। वहीं से भिन्न सेना को पुनः व्यवस्थित कर युद्ध करे।[18]

राजा को स्वयं व्यूह में सम्मिलित नहीं होना चाहिये, क्योंकि पत्ते, फल और वृक्ष का छेदन होने पर वह पुनः हरा-भरा हो सकता है, किन्तु मूल के काटने पर नष्ट हो जाता है। राजा हारे हुये शत्रु को पीडा न दे, क्योंकि वे पुनः संगठित होकर मरने का निश्चय करके पूरी सेना को परास्त कर सकते हैं। चोट खाकर भी सिंह पुनः पराक्रम करता है अर्थात् अपनी गुफा के निकट नहीं आने देता है, अतः अपने स्थान में रहकर ही शत्रु का वध सरलता से हो सके, तो करना चाहिये।

समस्त सैनिकों के मध्य एक निश्चित अन्तर रखना चाहिये, जिससे युद्ध करने में आसानी रहे। राजा अपनी सुरक्षा हेतु विश्वस्त मन्त्रियों, वफादार सेवकों, शूरवीर योद्धाओं का समूह नियमित कराये तथा अपने गुप्तचरों को अतिसक्रिय कर दे, क्योंकि गुप्तचर राज्य की धमनियां होते हैं।[19]

[16] शुक्रनीति. वाद्यसंकेत १०९८-११०३

[17] कौटिलीय अर्थशास्त्र

[18] कौटिलीय अर्थशास्त्र

[19] विष्णुधर्मोत्तरपुराण खण्ड-२, अध्याय.१७७

वर्तमान में प्रौद्योगिकी के इस युग में मानव ने उच्चस्तरीय अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया है। प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१९१९) तथा द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३९-१९४५) की विभीषिका के विषय में सोचकर ही हृदय द्रवित होता है तथा यदि तृतीय विश्वयुद्ध हुआ तो निश्चित ही समस्त पृथ्वी पर मानव समुदाय के अस्तित्त्व समाप्त होने की पूर्ण सम्भावना है। किन्तु फिर भी दो देशों के मध्य आज यथा- भारत-पाकिस्तान (१९६५,१९७१,१९९९) भारत-चीन (१९६२), शीतयुद्ध (अमेरिका-रूस) तथा आतंकवाद के क्षेत्र में इन शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया जाता है। आज रथ, अश्व तथा हाथी का स्थान तोप, टैंक, मिसाइल, लडाकू विमान, ड्रोन, परमाणु, अणु, हाइड्रोजन बम ने ले लिया है। यद्यपि पैदल सैनिक तो आज भी विद्यमान हैं, किन्तु वे आज धनुष और तलवार के स्थान पर उच्चतकनीकयुक्त बन्दूक तथा बम का प्रयोग कर रहे हैं।

जिस प्रकार विगत वर्षों में भारत पर विदेशी हमले हुये हैं तथा आज भी दोतरफा हमला (एक ओर पाकिस्तान से तथा दूसरी ओर चीन से) से स्वयं को सुरक्षित रखना भी स्वयं में चुनौती है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में भारतीय प्राचीन धनुर्वेदीय सिद्धान्तों को खोजकर उनका प्रयोग कर समुचित उपयोगिता सिद्ध करने की आवश्यकता है। सम्प्रति प्रयोग में लिए जाने आयुधों, युद्ध सम्बन्धी नवीन समझे एवं सुने जाने वाले युद्धप्रकारों एवं युद्धसंरचाओं की विस्तृत जानकारी धनुर्वेदीय ग्रन्थों में उपलब्ध है, परन्तु सम्प्रति प्राचीन ग्रन्थों को धर्मविशेष से जोङने के कारण ऋषियों द्वारा सम्पादित दुर्लभ सम्पदा समाप्त होने के कगार पर है।

यद्यपि इस सम्पदा का ज्ञान होने पर भारत सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की सामर्थ्य रखता है, किन्तु इस क्षेत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण तथा ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। संस्कृत वाङ्मय में ऐसा दुर्लभ ज्ञान निहित है, जिससे भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो सकता है।

**प्रमुख व्यूह संरचना-**

चक्रव्यूह

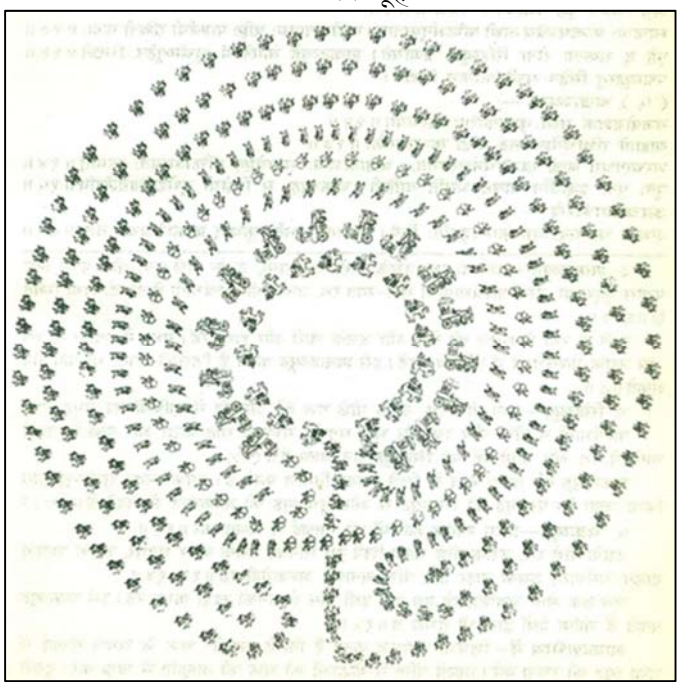

खलकव्यूह

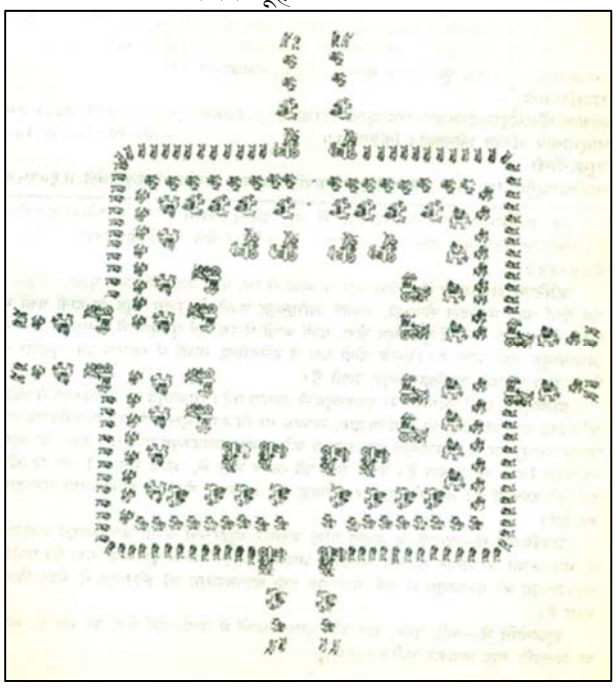

अग्निव्यूह

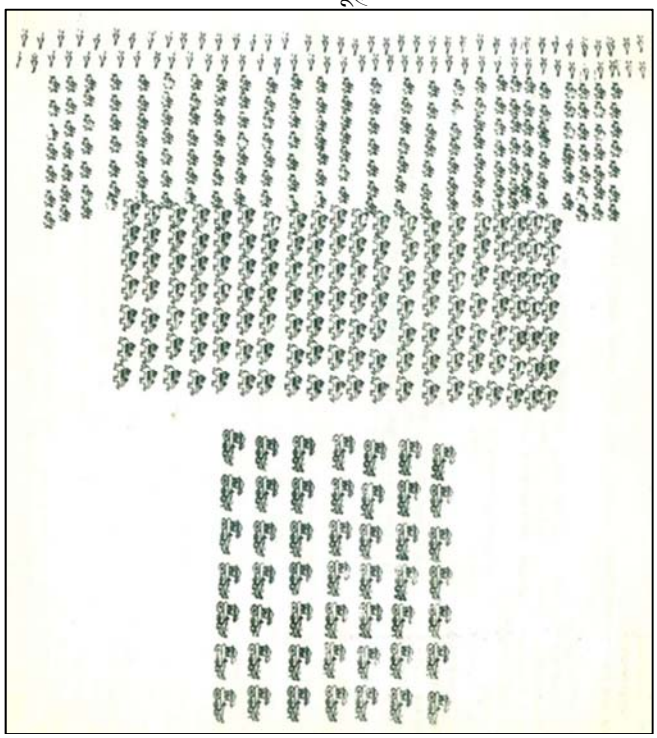

पद्मव्यूह

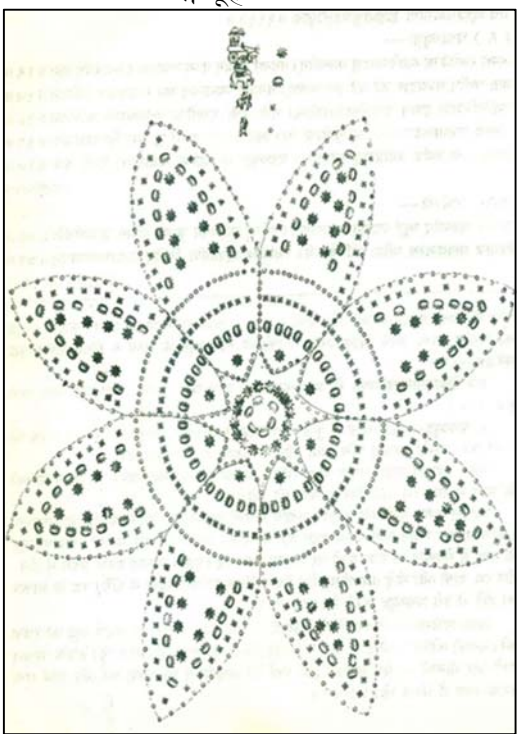

सर्पव्यूह

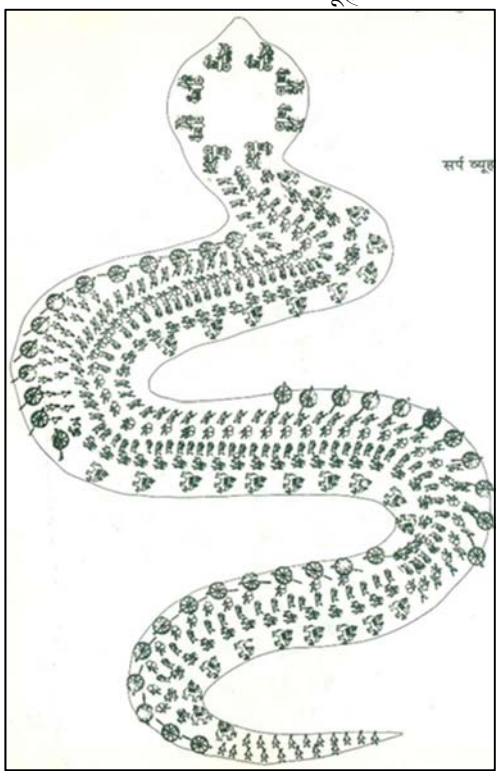

शकटव्यूह

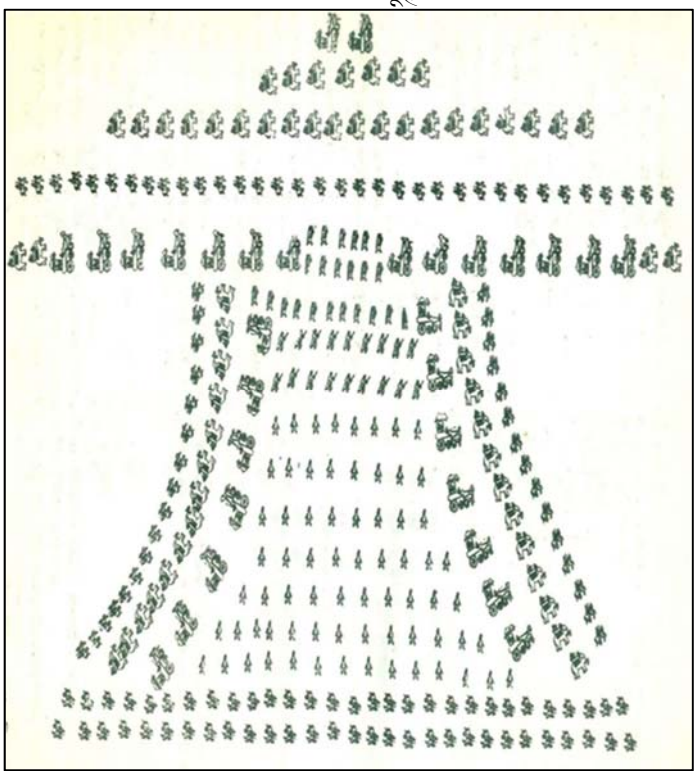

श्येनव्यूह

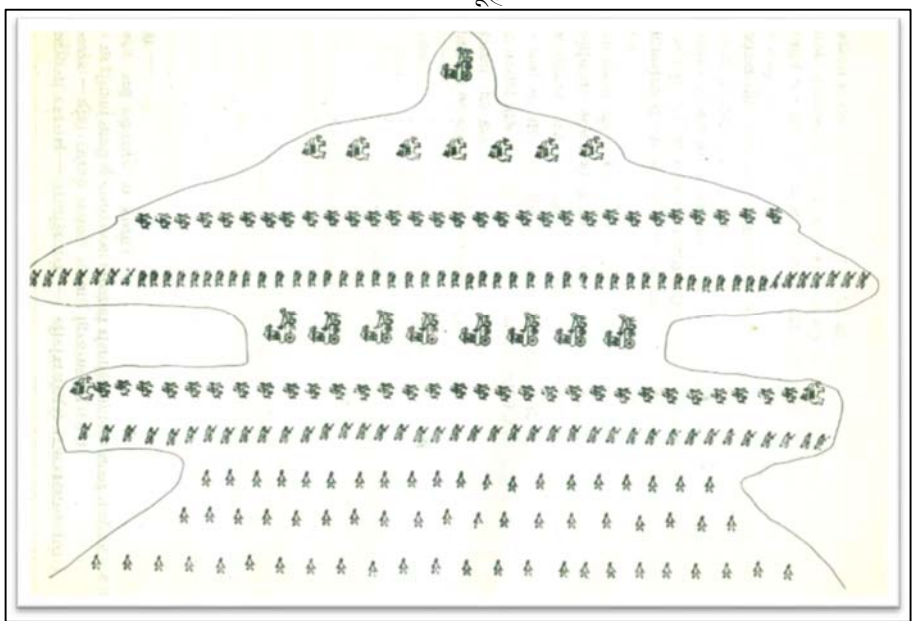

सिंहव्यूह

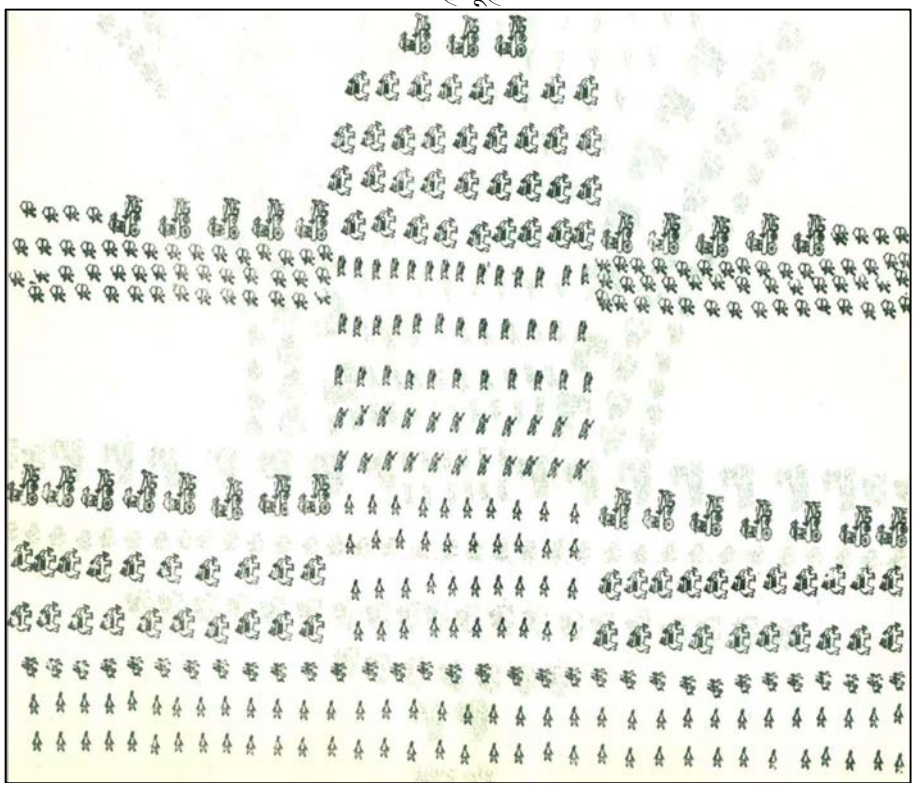

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. *कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्.* सम्पादक. वाचस्पति गैरोला. वाराणसी. चौखम्भा विद्या भवन, वि.सं. २०१९।
2. *धनुर्वेद.* संकलन- डॉ. देवव्रत आचार्य. दिल्ली. विजयकुमार गोविन्दराम हसानन्द. संस्करण १९९९ ई. ॥
3. झा. उदयनाथ "अशोक". *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति.* नई दिल्ली विद्यानिधि प्रकाशन. संस्करण २०१३ ई. ॥
4. शर्मा. उमाशंकर "ऋषि". *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* प्रकाशक. वाराणसी. चौखम्बा भारती प्रकाशन, संस्करण १९९९ ई.।

5. गैरोला. वाचस्पति. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* प्रका. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी. संस्क. १९९७ ई.।
6. कोश-ग्रन्थ-
7. सिंह. अमर. *अमरकोष.* श्री भानुजिदीक्षित कृत सुधाख्या रामाश्रमीत्यपरा टीका सहित. संस्कर्ता महामहोपाध्याय पण्डितशिवदत्ताभिधः. नई दिल्ली, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, पुनर्मुद्रित २००३ ई.॥
8. जोशी, लक्ष्मीकान्त, *धर्मकोश,* प्रकाशक-प्रज्ञा पाठशाला मण्डल,सतारा, संस्क-२००९संवत।
9. तर्कवाचस्पति. श्रीतारानाथ. *वाचस्पत्यम्.* नई दिल्ली, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, पुनर्मुद्रित २०००ई.।
10. आप्टे. वामन शिवराम. *संस्कृत-हिन्दी कोश.* नाग पब्लिशर्स. आठवां संस्करण, २००२ ई.।
11. राजाकान्तदेव. *शब्दकल्पद्रुम.* नई दिल्ली. राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान. पुनर्मुद्रित २०००ई.।